ठाणे। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री विद्या बालन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कंचन।

दिल्ली -दिलशाद गार्डन। जी.टी.बी.अस्पताल के नर्सेस व डाक्टर्स के साथ आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु.इन्द्रा।

रतलाम। कान्वेंट स्कूल के बच्चों को सफलता में एकाग्रता का महत्व विषय पर समझाते हुए ब्र.कु.सीमा एवं ब्र.कु.पार्वती।

नवरंगपुर। क्लीन द माइण्ड-ग्रीन द अर्थ अभियान के अवसर पर उप जिलापाल परीक्षित सेठी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीलम।

दिल्ली (शालीमार बाग)। शांतिदूत साइकल रैली अभियान के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु.कृष्णा, ब्र.कु.पूनम तथा अन्य।

शिवली (उ.प्र.)। ब्र.कु.उर्मिला, नगर पंचायत अध्यक्ष लल्लन बाजपेयी, ब्र.कु.प्रीति, ब्र.कु.विमलेश, ब्र.कु.प्रेम तथा अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर पर।

प्रश्न -जब मैं आपके आश्रम पर जाता हूँ तो बहुत अच्छा लगता है, परन्तु आपने ब्रह्मा के स्थान पर अपने गुरु का चित्र रख दिया है। यह देखकर अच्छा नहीं लगता है, क्या आपने भी औरों की तरह अपने गुरु को भगवान बना दिया?

उत्तर -आपका यह सोचना उचित ही है। आपको ब्रह्मा, विष्णु व शंकर के बारे में कुछ और भी जानना चाहिए। ये तीन देवता सृष्टि के तीन मुख्य काम करते हैं। स्थापना, पालना और विनाश। विचारणीय है कि इनके ऊपर भी कोई अवश्य होगा जैसे ॐ के चित्र में तीन लाइनों के अतिरिक्त ऊपर एक बिन्दी भी दिखाई है। वो एक ही परमसत्ता है, सर्वशक्तिवान है, महाज्योति है व अशरीरी निराकार है। बिन्दु स्वरुप है। वही इन तीन देवताओं के भी रचयिता हैं। उसी को सबने भुला दिया है। वे कलियुग के अंत में इस धरा पर आकर दो महान कार्य करते हैं। एक -सतयुग की स्थापना व दूसरा -कलियुग का विनाश। स्थापना का अर्थ ये नहीं कि वे स्थूल में निर्माण करते हैं। इसका अर्थ है कि वे कलियुग को ही सतयुग में बदलते हैं। पहले सतयुग की स्थापना कर देते हैं और फिर कलियुग का विनाश करते हैं। स्थापना के लिए उन्हें मनुष्य तन में प्रवेश करके सभी मनुष्यों को सत्य ज्ञान देना होता है। उस ज्ञान से ही मनुष्य देवता बनता है और सतयुग का आगमन होता है। निराकार परमात्मा ने दादा के तन में प्रवेश होकर ज्ञान दिया और उनको नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। वे भगवान नहीं, भगवान के साकार माध्यम बने। वे हमारे गुरु नहीं अलौकिक पिता हैं। हम उनकी पूजा नहीं करते, उन्हें फालो करते हैं। हम उनसे योग नहीं लगाते, वे भी स्वयं शिव से योग लगाते थे।

प्रश्न -आपने ब्रह्मा बाबा को देखा है, आपने उन्हें किस रुप में देखा?

उत्तर -मैंने उन्हें महान तपस्वी के रुप में देखा। यह प्रसिद्ध भी है कि आबू में ब्रह्मा ने तपस्या की थी। ये भी दिखाते हैं कि जब भी कोई ब्रह्मा लोक में गया तो उसने ब्रह्मा को तपस्या में ध्यान मग्न पाया। वे पूर्णतया व निरंतर योगयुक्त रहते थे, इसे ही निरंतर समाधिस्थ अवस्था कहते हैं। हजारों लोगों ने उन्हें इस रुप में देखा। जब भी कोई उनके पास जाता था, उन्हें अनुभूति होती थी कि वे सदा योगयुक्त हैं, अशरीरी हैं, विदेही हैं। एक सुंदर संतुलन था उनके जीवन में। ऐसे नहीं कि वे योगयुक्त रहते थे तो सूखे थे, आफिशियल थे या किसी से बात नहीं करते थे। नहीं, जब भी कोई उनसे मिलने जाता था तो एक ही आवाज कानों में पड़ती थी, 'आओ बच्चे'। बहुत मधुरता व सरलता थी उनके जीवन में। वे सर्वस्व त्यागी थे और पूर्णत: निर्लिप्त रहते थे। कर्म करते भी जैसे कि वे यहाँ नहीं रहते थे। संसार में तो ऐसे रहते थे कि मानो ये संसार उनके लिए हो ही नहीं। वे यहीं जीवनमुक्त थे। मैंने उन्हें साधारण नहीं, महान विचारों में मग्न देखा। महान विचार, उदारता व विशालता उनके श्रृंगार थे। छोटी-छोटी बातें तो जैसे कि उनका विषय ही नहीं था। यहाँ लोग छोटे-छोटे तेरे-मेरे में उलझे रहते हैं और प्रथम दिन से

मन की बातें

- ब्र.कु.सूर्य

उन्होने स्वयं को मैं-पन से मुक्त कर लिया था।

प्रश्न -हमने सुना है कि जबसे बहनें सेवा पर गई थीं, कई सम्प्रदायों ने बाबा का व ज्ञान का बहुत विरोध किया। बाबा ने स्वयं भी कई वर्ष यज्ञ में बेगरी पार्ट देखा। इन सबमें उनकी स्थिति कैसी रही?

उत्तर -तपस्या के मार्ग पर मनुष्य को तपना तो पड़ता है और जब कोई मनुष्य महान कार्य पर निकलता है तो उसे बहुत कुछ सहन करने के लिए भी तैयार रहना होता है। बाबा तो मानो सहनशीलता व दृढ़ता के अवतार थे। इस यज्ञ को अनेक तूफान लगे परन्तु वे सदा ही अचल अडोल रहे। विरोधियों ने विघ्न डाले पर वे निर्विघ्न रहे। जब तक लोग उनके समीप नहीं आये, उनका विरोध करते रहे, परन्तु समीप आते ही सत्य को पहचानकर वे उनके प्रशंसक बन गये। गलतफहमियों के कारण लोगों ने उनकी ग्लानि की और फिर उनके ही हो गये। इसका एक मुख्य कारण था कि वे किसी के लिए भी शत्रुभाव नहीं रखते थे, सदा ही कहते थे...सब मेरे बच्चे हैं, एक दिन अवश्य सत्य को पहचान लेंगे। शुभभावना व प्यार से भरा उनका दिल सभी के दिल को जीत लेता था।

बेगरी पार्ट के क्षण तो सचमुच ही भयावह थे। 380 लोग और अन्न नहीं, अनेक लोग बीमार पर पैसा नहीं। बड़ी भारी परीक्षा थी, परन्तु वे भी तो ब्रह्मा थे। शिव बाबा पर सम्पूर्ण विश्वास और दिव्य कार्य की सूक्ष्मता की पहचान उन्हें थी। वे जानते थे कि यज्ञ की सफाई हो रही है और स्वयं भगवान यज्ञ रक्षक हैं। इसलिए वे पूरी तरह अचल अडोल रहे।

प्रश्न -ब्रह्मा बाबा ने 1969 में देहत्याग किया। परन्तु ब्रह्मा तो मरते नहीं। फिर आप ये भी कहते हो कि उनकी आयु सौ वर्ष थी। ये बातें हमें समझ में नहीं आती।

उत्तर -जिसने भी देह धारण किया, उसे वो देह तो छोड़नी ही है। ब्रह्मा अमर हैं, यह बात सत्य नहीं। ब्रह्मा मनुष्य हैं, उन्हें आदम भी कहते हैं। आदम, आदमी का ही पर्याय है। वे प्रथम पुरुष हैं। ब्रह्मा का स्थापना का कार्य व्यक्त रुप से पूर्ण हो गया तो फिर उनके यहाँ रहने का कोई औचित्य नहीं है। वे ही फिर विष्णु बन सृष्टि की पालना करते हैं। जो स्थापना करते हैं, पालना भी उन्हें ही करनी होती है। ब्रह्मा की आयु सौ वर्ष है। यह आयु देह की नहीं अर्थात् दादा लेखराज (ब्रह्मा बाबा का पूर्व का नाम) की नहीं। ब्रह्मा का कार्य सन् 1937 से प्रारंभ हुआ और यह कार्य 2036 तक पूर्ण हो जायेगा। इसमें कुछ कार्य वे साकार रुप में करते हैं और कुछ अव्यक्त रुप में। उसके बाद वही आत्मा श्रीकृष्ण के रुप में धरा पर जन्म लेगी और सतयुग का प्रारंभ हो जाएगा।

प्रश्न -हमने सुना है कि ब्रह्मा बाबा की आत्मा अब भी आती है। वे अब कहाँ रहते हैं? क्या आपका उनसे अब भी सम्पर्क है। उनके पार्ट के बारे में बताएं कि क्या अब भी वे सेवा कर रहे हैं?

उत्तर -18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ा। शरीर तो सभी छोड़ते हैं परन्तु उन्होने योगयुक्त अवस्था में, सम्पूर्णता को प्राप्त करके स्व-इच्छा से बिना कष्ट के एक सेकण्ड में देह त्यागी। हम इसे अव्यक्तारोहण कहते हैं। वे कर्मातीत हो गये थे, इसलिए उनका पुनर्जन्म नहीं होना था। अत: वे सूक्ष्म लोक में फरिश्ते स्वरुप में रहने लगे। उनकी सूक्ष्म देह अब भी निराकार परमात्मा का माध्यम है अथवा कहें कि वाहन है। उसी में प्रवेश करके सर्वशक्तिवान अपने वत्सों से मिलने आते हैं। वे हमारे लिए अब भी मानो जीवित ही हैं। हमारा उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध है, वे आते हैं और हमें ज्ञान देते हैं। यज्ञ अब भी उनकी ही सुरक्षा व मार्गदर्शन में चल रहा है।

ब्रह्माकुमार है ...

- पेज 7 का शेष

बच्चे आने वाले समय में आपको स्वयं परमपिता परमात्मा का साथी बनकर उनको प्रत्यक्ष करना है और वो दिन दूर नहीं है जब हमें स्वयं परमात्मा का माध्यम बनकर के सभी को उसकी अनुभूति करानी होगी। बाबा ने जो हम लोगों को इतनी पालना दी है उसका रिटर्न देने का समय है। बाबा यह चाह रहे हैं कि और बातों से उपराम होकर हम स्वयं को आत्मा समझें।

प्रश्न: संस्था के मुख्य भाई के रूप में इतने विशाल संगठन में अपनी सेवाएं देते हुए आप किन ईश्वरीय शिक्षाओं को याद करके स्वयं भी संतुष्ट रहते और सभी को संतुष्ट कर पाते हैं? सभी को आगे बढ़ाने तथा उन्हें एकता के सूत्र में बांधने के कर्त्तव्य में आने वाली आन्तरिक तथा बाह्य समस्याओं का समाधान कर आप स्वयं बेफिक्र कैसे रह पाते हैं?

उत्तर: मुझे बाबा-मम्मा की एक बात सदा याद रहती है कि एक बार जो आत्मा बाबा की बनती है उनमें कोई न कोई विशेषता जरूर है। भले कोई भी प्रकार की समस्या आए या उनसे कोई गलती भी हो जाए तो भी मैं कभी उनको दोषी के रूप में नहीं देखता हूं और मेरा यही प्रयास रहता है कि मैं किस तरह से उस आत्मा को सहयोग देकर समस्या से बाहर निकालूं जैसे बाबा ने मुझे हर समय पर सहयोग दिया ताकि फिर से वह आत्मा बाबा के समीप आकर अपनी आध्यात्मिक यात्रा को सफल करे और उसके लिए मैं जो कर सकता हूं वो करूं।